उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)	इण्टरमीडिएट परीक्षा 'अ' (उत्तराखण्ड) 12 पन्ने

'खण्ड - अ'

उत्तर संख्या 01 :-

क. मनुष्य का प्राय: स्वभाव ही सुंदर देखने का होता है वह सुंदरता को सदा सर्वदा तालश करता है।

ख. लड्डू का उदाहरण इस सन्दर्भ में दिया गया है कि मनुष्य हर चीज में सुंदरता की तालाश करना पसंद करता है टेढ़ा लड्डू भी मीठा होता है पर वह उसे गोल बनाकर सुन्दर कर लेता है।

ग. उच्छृंखलता और सौन्दर्य प्रेम में यह अंतर है कि सौन्दर्य प्रेम में संयम होता है वही उच्छृंखलता में इसका अभाव होता है।

घ. लेखक के अनुसार बिगड़े दिमाग का युवक परायी बहु - बेटियों के घूरने को भी सौन्दर्य प्रेम कहा करता है, और यही संसार की सर्वाधिक असुन्दर बात है।

ङ. जीवन में सामंजस्य बनाने के लिए संयम की आवश्यकता होती है।

च. मनुष्य की सर्वोत्तम कृति साहित्य को कहा है जिसका अर्थ सात्विक चिन्तन द्वारा से है।

छ. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक 'साहित्य एवं सौन्दर्य प्रेम' होना चाहिए।

उत्तर संख्या० 2 :-

विषय :- जनसंख्या विस्फोट

संकेत बिंदु :-

1. प्रस्तावना
2. भारत की बढ़ती जनसंख्या
3. जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणाम
4. जनसंख्या वृद्धि के रोकथाम के उपाय
5. उपसंहार

प्रस्तावना :-

जनसंख्या से आशय किसी स्थान विशेष मे रहनी वाली आबादी बढ़ती जनसंख्या किसी भी देश के लिए विकास मार्ग मे बाधा है, जनसंख्या वृद्धि दर बढ़ने से किसी समाज को कई दुष्परिणाम देखने को मिलते है संसाधन एवं सुविधाओं की कमी व बेरोजगारी जो किसी भी देश की प्रगति के लिए एक बाधा है।

भारत मे बढ़ती जनसंख्या

भारत एक विकासशील देश है यहाँ भाँति - भाँति के जाति धर्म, संप्रदाय और स्थान के लोग रहते है पर आज जनसंख्या का बढ़ना इतनी तीव्र दर से भारत के लिए चेतावनी है, भारत मे विश्व की 16% आबादी है परंतु रहने के लिए मात्र विश्व का 2% भू भाग है, अत: 2023 संयुक्त राष्ट्र के सर्वेषण से यह पाया गया कि भारत की कुल आबादी 141 करोड़ है जो विगत वर्षों से बहुत तीव्र दर से बड़ी है अत: यह एक भयावह स्थिति

बन चुकी है।

जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणाम -

जैसा कि हमे पता ही है भारत 16 % विश्व की आबादी वाला देश है परंतु रहने के लिए मात्र 2 % विश्व का भूमि भाग अत: धीरे - धीरे जनसंख्या वृद्धि होने से वनो का कटाव हो रहा है ताकि निर्माण व रहने के लिए भूमि प्राप्त हो सके। एक मनुष्य की आम जरूरत होती है रोटी, कपड़ा व मकान परंतु बढ़ती आबादी से अपनी जरूरतो को पूरा करना भी एक संघर्ष बन गया है शिक्षितो को भी नौकरी नही मिल पा रही है और बेरोजगारी दर तीव्रता से बढ़ता जा रहा, संसाधनो व सुविधाएँ वांचितो को मिल नही पारही और महंगाई का प्रकोप अपने चरम पर है परिणाम यह है कि बेरोजगारी, संसाधनो की की कमी, वनो की भूमि का कटाव, शिक्षा मे संघर्ष व महंगाई निरन्तर बढ़ती जा रही है

जनसंख्या वृद्धि के रोकथाम के उपाय :-

जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारण तो मृत्यु दर भी में कमी व जन्म का दर तीव्रता से बढ़ना है भारत के ऐसे कई ग्रामीण एव पिछड़े क्षेत्र है जहाँ अशिक्षा अपने चरम पर है तथा लोग जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणाम के प्रति जागरूक नही परिणामत: जीवन यापन करने का संघर्ष निरन्तर बढ़ते ही जा रहा है आज आवश्यकता है तो जन जागरूकता की, सरकार को भी लोगो को जनसंख्या वृद्धि के प्रति जागरूक करने के लिए. जनकल्याण कार्यक्रम चलाने चाहिए तथा अधिक से अधिक शिक्षा दर बढ़ाने की आवश्यक-ता है, सरकार को युवा पीढ़ी को भी अपने साथ लेना होगा तथा पिछड़े क्षेत्रो का भी उद्धार करने की आवश्यकता है तभी भारत अपने गौरव को पुन: प्राप्त कर सकेगा तथा विश्वगुरु का परचम लहराएगा ।

उपसंहार :-

अत: हम कह सकते है कि जनसंख्या वृद्धि किसी भी देश के विकास के लिए बाधा यदि आज भारत को विकसित होना है तो निश्चित रूप से जनसंख्या को घटाने की आवश्यकता है इस के लिए हर युवा को कंधे से कंधा मिलाकर

चलना होगा, जन जागरूकता व शिक्षा दर बढ़ाना होगा, रोजगार के अवसर बढ़ाने होंगे, सरकार को भी पूरा समर्थन देना होगा, गरीबों वांचितो व पिछड़े वर्ग के लोगों को जनसंख्या वृद्धि से होने वाले दुष्परिणामो से अवगत करना होगा तथा सख्त कानून बनाने होंगे तभी भारत अपना गौरव प्राप्त करेगा।

"जनसंख्या को कम करना है, भारत को विश्व गुरु बनाना है।"

उत्तर संख्या 03 :-

क. (i) श्रव्य दृश्य माध्यम

ख. (ii) सम्पादक द्वारा किसी प्रमुख घटना और समस्या पर लिखा गया विचारात्मक लेख

ग. (iii) क्या, क्यों, कब, कहाँ, किधर और किसका।

घ (iii) इण्टरनेट द्वारा त्वरित गति से समाचारो , सूचनाओ का प्रसारण करना ।

ङ. (i) संवाददाता से मिली जानकारी को दृश्यो के बगैर बताना ।

उत्तर 04 :-

स्वतंत्रता दिवस

15 अगस्त 2024 को सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कॉलेज ऋषिकेश मे स्वतंत्रता दिवस का कार्यक्रम बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि । राज्य सरकार के कैबिनेट एवं वित्त मंत्री डॉ प्रेम -चन्द्र अग्रवाल एव विशेष अतिथि ऋषिकेश नगर निगम महापौर श्रीमती अनिता ममगाई रहीं, कार्यक

कार्यक्रम की शुरुआत प्रधानाचार्य एवं अतिथियों ने ध्वजारोहण से की इस के बाद राष्ट्रगान के स्वरो के आलम से विशाल कक्ष गूँज उठा, इसके बाद दीप प्रज्जवलन कर सरस्वती

वंदना हुई, जिनके मधुर स्वर से ऐसा प्रतीत हुआ मानो साक्षात भगवती सरस्वती ही अपनी स्तुति कर रही हो, फिर स्वागत गीत एवं अतिथि परिचय हुआ।

फिर कार्यक्रम को शहीदो के बलिदान एवं देश की आजादी के इस ऐतिहासिक पल को याद करके शुरु हुआ, सर्वप्रथम एक राष्ट्रभक्ति के गीत से एक बालक ने सबके हृदय को राष्ट्रभक्ति से ओत प्रोत कर दिया फिर एक - एक करके। सांस्कृतिक लोकनृत्य एवं देशभक्ति से ओत-प्रोत कार्यक्रम का प्रस्तुतीकरण हुआ और अतिथियो ने इस के बाद अपना शुभाशीष देकर हमे देशभक्ति के बारे मे बताया

अंत मे हमारे विद्यालय के यशस्वी व सम्मानित प्रधानाचार्य जी ने समस्त अतिथियो एव समस्त स्टाफ का धन्यवाद ज्ञापन किया, राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् से कार्यक्रम का अंत हुआ सभी के हृदय मे देशभक्तो के प्रति श्रद्धा एवं शहीदो के बलिदान के लिए सम्मान का भाव था,

उत्तर संख्या 05 :-

क. चिड़िया के बच्चे अपने माता-पिता का इंतजार घोंसलो में कर रहे होंगे उन्हे अपने माता-पिता से मिलने की आशा होगी ताकि वे उनसे भोजन, स्नेह एवं सुरक्षा पा सके उन्हे अपने माता-पिता से वात्सल्य की प्रत्याशा होगी।

ख. चिड़िया को जब यह बोध होगा की शाम होने वाली है और दिन ढलने वाला है तथा घोंसलो मे उसके बच्चे उससे मिलने का इंतजार कर रहे होंगे तो अपने बच्चो से मिलने की व्यथा व घर जल्दी पहुँचने की व्याकुलता व चिड़िया की मातृत्व शक्ति उसके पंखो मे चंचलता भर देती है।

ग. उपर्युक्त पद्यांश के रचनाकार का नाम 'हरिवंश राय बच्चन जी' है।

उत्तर संख्या 06 :-

क. प्रस्तुत काव्यांश हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग - 2' से संकलित है इसमे कवि कह रहे है कि कविता भी फूल की तरह ही खिलती है मगर फर्क केवल इतना है कि फूल निश्चित समय एवं स्थान तक महकता है परंतु कविता अपने भावो से सदा सबके हृयय को चिरस्थाई से प्रभावित करती है, कविता कालजयी होती है तथा उसमे हमेशा एक ताज़गी बनी रहती है अत: फूल कविता के खिलने को नही जान सकता वह तो समय एव स्थान के बंधनो के परे भी खिल सकती है।

उत्तर संख्या 07 :-

क. कैमरे मे बंद अपाहिज कवि रघुवीर सहाय द्वारा लिखी गई एक ऐसी कविता है जो आज के युग मे मानव संवेदनहीनता को उजागर करती है,

कवि कहते है कि दूरदर्शन कार्यक्रम के संचालक अपने आपको समर्थ शक्तिवान मानते है क्योंकि उनके अनुसार वे किसीकोभी छवि का उत्थान और पतन कर सकते है वे दूरदर्शन कार्यक्रम मे एक साक्षात्कर हेतु ह एक अपंग व्यक्ति को लाते है व उससे कई बेतुके सवाल पूछते है तथा उसके दुख एवं पीड़ा को अपने नफा नुकसान के तराजू पर तोल देते है जिससे जनता की सहानुभूति बँटोरकर अपने कार्यक्रम को सफल बना सके। इससे अधिक अमानवीय क्या होगा। यह आज समाज की क्रूरता को उजगार करती है।

ब. कवि उमाशंकर जोशी स्वयं के कृ कवि कर्म को कृषि कर्म से जोड़ते है जैसे एक किसान खेतो मे बीज बोकर फसल उगाता है। ठीक उसी प्रकार कवि भी अपने चार कोनो वाले खेत रूपी पन्ने पर अपने विचार रूपी बीज बोते है. जो कल्पनाओ का रसायन पीकर एक कविता के रूप मे विकसित हो आनंद रूपी रस प्रदान करता है जो रचना कालजयी होती है।

उत्तर संख्या 04 :-

क. रसोई में जाने से पूर्व भक्तिन ने सुबह प्रातःकाल उठ लेखिका की धुली धोती पर जल के छींटे मारकर पवित्र किया फिर उसे धारण कर पीपल एवं सूर्य को जल का अर्घ्य देकर, दो मिनट जप किया। तत्पश्चात कोयले की मोटी रेखा से सीमा निश्चित कर खाना पकाना शुरु किया।

ख. लेखिका 'महादेवी वर्मा' के अनुसार 'भक्तिन छूत-पाक को मानने वाली थी, वह ग्रामीण संस्कृति के अनुसार अपना जीवन जीती व शहरी आचार व्यवहार को अपनाने को तैयार नहीं थी तथा अपने उसूलों की पक्की एवं स्वाभिमानी महिला थी अतः लेखिका ने समझौता करना ही उचित समझा।

ग. प्रस्तुत गद्यांश 'पाठ भक्तिन' से संकलित है इसकी लेखिका महादेवी वर्मा है।

उत्तर संख्या ०१:-

क. जीजी लोक प्रचलित विश्वासो को मानती थी तथा उन्हे इंदर सैना पर पानी फैंकना उचित लगता था जिसके लिए उन्होंने निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए :-

1. यह पानी की बर्बादी नही है यह तो जल का अर्घ्य है जो हम इंद्र देव को इंदर सेना के माध्यम से अर्पित करते है ताकि वर्षा हो सके।

२. ऋषि मुनियों के अनुसार जिस चीज की हमे आवश्यकता है और उस - को हम दान मे दे रहे है तो वही वास्तिविक दान है जिसका पुण्य हमेशा प्राप्त होता है।

३. जब किसान को 30 - 40 मन अच्छी गेहूं की फसल उगानी होती है तो पहले वो 5 - 6 सेर क्यारियों मे बीज रूप मे बोता है ठीक उसी प्रकार यह जल की बुपाई है जो वर्षा के रूप मे फसल देती है।

उत्तर संख्या 9 ख.

लेखक के अनुसार शीर्ष शिरीष वसंत ऋतु मे खिलता है जो आषाढ़ तक अपनी सुंदरता बनाये रखता है प्रचंड गर्मी लू आदि का। उस पर कोई असर नही होता है इतनी भीषण अग्निकुंड मे भी वे बिना व्याकुल हुए स्थिर रहता किसी शास्त्रीय अवधूत की तरह जीवन के अजयेता के मंत्र की घोषणा करता है जैसे कि काल जयी अवधूत जो सुख-दुख मे समान भाव से रहता है तथा काल को भी विजय प्राप्त कर लेता है।

उत्तर संख्या 10 :-

क. यशोधर बाबू के व्यक्तित्व पर सबसे अधिक प्रभाव किशन दा का पड़ा वे सदा किशन दा के आदर्शों पर चलते थे ठीक उसी प्रकार मेरे जीवन मे मेरी दशा व दिशा बदलने मे

सबसे बड़ा हाथ मेरी बहन का है उसने मेरा हमेशा आत्मविश्वास बढ़ाया है तथा हमेशा संघर्ष व मेहनत करने की हिम्मत दी है तथा उसने मुझे व एक कामयाब अच्छा व्यक्ति बनाया है, जीवन में निरंतर हार न मानने व सबसे शिष्टता व अच्छे व्यवहार रखने की प्रेरणा दी है, वो किसी मित्र की तरह मेरे जीवन की हर परेशानियों को सुलझाने मेरा साथ दिया है आज मैं सफ़ल हो सका तो उसका श्रेय मेरी बहन को जाता है।

ब. कविता के प्रति लगाव से पहले लेखक को अपना अकेलापन खटकता था उसे जानवर चराते वक्त और खेत में काम करते वक्त अपने साथ कोई बात करने वाला चाहिए था अकेले उसका काम पे मन नही लगता था परंतु जब उसकी मुलाकात न.वा सौंदलगेकर से हुई तो उसका कविता के प्रति रुझान जागा अब उसे अकेले रहना अच्छा लगने लगा क्योंकि वह अकेले काम करते वक्त कविताओ की

तुकबंदी कर सकता था
तथा ऊँचे स्वरो मे
कविता गाकर अभिनय
भी कर सकता था,
वो आय-दिन कविता।
बनाता और उसमे रम
जाता, अब कविताएँ ही
उसकी मित्र बन गयी थी
उसे अब कविता के लगाव
के बाद अपना अकेलापन
पसंद आने लगा था।

ग. सिंधु - सभ्यता भारत की
एक प्राचीन ताम्रकालीन
सभ्यता थी जो राजपोषित
था धर्म पोषित न होकर
समाज पोषित थी, यह एक
सुनियोजित सभ्यता थी जहाँ
संसाधन हर आम व्यक्ति
की पहुँच मे थे, यहाँ
भव्यता व शान का आडंबर नही
था यह जरूरत केंद्रित सभ्यता
थी यहाँ न भव्यमहल व न
धर्म के आडंबर के लिए
बड़े मन्दिरो के अवशेष मिले
व्यापक खुदाई से जो मिला
वो आकार मे बहुत छोटी
थी यहाँ तक की नरेश
का मुकुट भी पेंच भर
का था, न यहाँ

किसी धार्मिक साधु की समाधि स्थल मिला न राजा की कब्र का अवशेष, यह सभ्यता लघुता में महत्ता वाली सभ्यता थी जो समाज के उत्थान के लिए अनुशासन द्वारा संचालित होती थी,

उत्तर संख्या 11 :-

'जूझ' का अर्थ होता है जुझारूपन या संघर्ष, जो लेखक आनंद यादव की आत्मकथा का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, यह कथा लेखक के अथाह संघर्ष व मेहनत पर आधारित है लेखक आनंद यादव ने कैसे विपरीत परस्थितियों से कभी हार नही मानी तथा जीवन पर्यन्त संघर्ष व जी तोड़ व मेहनत कर सफलता की बुलंदियों तक पहुँचे, उनका पढ़ाई के प्रति जुनून व उससे अपने कल के सुनहरे भविष्य बनाने के सपने के पीछे कई - दिक्कतों से जूझना पड़ा, लेखक के

पिता ने उनका पाँचवी मे पाठशाला जाना छुड़वा दिया था फिर भी दत्ता जी की सहायता से उन्होने पुन: पाठशाला जाना शुरु किया वहाँ उनका बच्चो ने तिरस्कार किया फिर भी पढ़ाई का जोश नही छोड़ा और एक सफल मराठी उपन्यासकार व कथाकार बन गए।

लेखक की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :-

(1) पढ़ाई के प्रति जागरुक व हौंसला न छोड़ना

(2) आत्मविश्वासी और निडर होके कठिनाईयो का सामना करना व कभी मुश्किलो से नही घबराना।

(3) कविता के प्रति जनून व अथाह रुचि।

'खण्ड - ब'

उत्तर संख्या . 12.

क. अरुणाचलप्रदेशे रुपग्या मेउभौसहोदरौ निवसत: स्म।

ख. अनुज: प्रतिदिनं अरण्यं गत्वा पशून् हत्वा मांस सङ्गृह्य आगच्छति स्म तेन मांसेन एव गृहे पाक: सज्जीक्रियते स्म।

ग. मांसखादनं यदि परित्यज्येत तर्हि गृहजनै: सर्वै: उपवास: आचरणीय: भवेत्।

उत्तर संख्या 13 :-

क. वल्ली वृक्षं वेष्टयते।

ख. अदृष्टे: क्व मार्ग: न अस्ति।

ग. वल्ली वृक्षं वेष्टयते सर्वं च गच्छति।

उत्तर संख्या 14 :-

क. विद्यालयस्य वार्षिक - विवरणस्य प्रस्तुतीकरणं आचार्यः करिष्यति ।

ख. मण्डूकस्य साफल्यस्य कारणम् लक्ष्यैकदृष्टिः निरन्तर प्रयत्न चास्ति ।

ग. वासुदेवः दुर्योधनस्य सभां पाण्डवाय पाध दायाद्या विभज्यर्थम् निवदवुं गतवान् ।

घ. जङ्गमानां शरीरे पञ्च धातवः भवन्ति ।

उत्तर संख्या 15:-

क. लक्ष्यैकदृष्टिः साफल्यस्य कारणम् अस्ति ।

ख. अस्माकम् राष्ट्रस्य नामं भारतवर्षम् अस्ति ।

ग. सः पुस्तकं ददाति ।

PTO

उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)

इण्टरमीडिएट परीक्षा 'ब'
(उत्तराखण्ड) 06 पन्ने

उत्तर संख्या 16 :-

क. (iii) सम्प्रदान कारक ।

ख. (ii) द्विगु

ग. (iii) पितृभ्य :

घ. (ii) गमिष्यति ।

अनुक्रमांक
25331883

ङ. (i) मृगाश्चरन्ति ।

च. (i) नमः + ते ।

उत्तर संख्या 17 :-

श्लोक :- हे जिह्वे कटुक स्नेहे, मधुरं किं न भाषसे,
मधुरं वद कल्याणि लोकोऽयं मधुरप्रिय : ।

02

अर्थ :- हे कड़वे से प्रिय करने वाली जीभ तू मधुर क्यों नही बोलती है कल्याण करने वाली मधुर बोल, यह लोक क्योंकि मधुर प्रिय है ।

02